भा वा अ शि प - वन उत्पादकता संस्थान, रांची

(भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून)

15.08.2023

स्वतंत्रता दिवस - 2023

भावाअशिप - वन उत्पादकता संस्थान राँची द्वारा दिनांक 15.08.2023 को 77वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर संस्थान के प्रांगन में पूर्वाहन 09:00 बजे राष्ट्रीय ध्वजारोहण का आयोजन किया गया जिसमे संस्थान के निदेशक डॉ. योगेश्वर मिश्रा ने सामूहिक राष्ट्रगान के साथ राष्ट्रीय तिरंगे की सलामी दी। उपस्थित संस्थान के वैज्ञानिकों, तकनीकी एवं गैर तकनीकी अधिकारियों, कर्मचारियों, शोधार्थियों, को संबोधित करते हुए संस्थान के निदेशक डॉ. योगेश्वर मिश्रा ने आजादी के लिए किये गए विभिन्न आन्दोलनों की चर्चा करते हुए बताया कि सर्वप्रथम 1757 में प्लासी युद्ध के साथ आजादी के आन्दोलन का शंखनाद हुआ जो बंगाल के मुर्शिदाबाद (जो उस समय लन्दन से कम विकसित नही था) के रास्ते अंग्रेजों के भारत आगमन के क्रम में हुआ। आन्दोलनकारियों के सामूहिकता के आभाव में आन्दोलन का दमन हो गया। 1857 में पुनः एक बड़ा आन्दोलन हुआ जो अंग्रेजों को सोचने पर विवश किया और उन्होंने दमनकारी नियम बनाने शुरू कर दिए लेकिन इस आन्दोलन ने पूरे भारत में आजादी की लहर पैदा कर दी। अनेको कुर्बानी के बाद 1947 में हमें आजादी मिली। आजादी को अक्षुण्ण रखने के लिए हमें बड़ी आर्थिक नुकसान भी झेलना पड़ा। हमें गर्व है कि दुनिया के सबसे अधिक युवा भारत में हैं और उन युवाओं के बल पर हम बहुत जल्द दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी आर्थिक शक्ति बनने जा रहे हैं। आजादी के वक्त हम भुखमरी, निरक्षरता, दरिद्रता से जूझ रहे थे जबकि आज हम अन्न तथा अन्य उत्पादों को दूसरे देशों में निर्यात करते हैं। हमने विज्ञान, कला अनुसन्धान, कृषि, रक्षा, तकनीकी आदि सभी क्षेत्रों में अतुलनीय विकास किया हैं। वानिकी के क्षेत्र में भी हम काफी आगे बढ़ रहे हैं। सीमित वन क्षेत्र होने के कारण हम गैर वानिकी क्षेत्रों में कृषि वानिकी, शहरी वानिकी आदि के माध्यम से वनावरण बढ़ा रहे हैं। विज्ञान की सफलता में इसरो द्वारा प्रक्षेपित चंद्रयान-3 कुछ ही दिनों में चांद पर उतरने को आतुर है।

स्वतंत्रता दिवस - 2023

दिनांक 15.08.2023

वन उत्पादकता संस्थान ने भी झारखण्ड, बिहार,बंगाल में वानिकी शोध पर काफी कार्य किए हैं एवं आगे कार्य जारी हैं। भावाअशिप देहरादून ने 69 वृक्ष प्रजाति के क्लोन विकसित किए हैं जिसके कारण हमारे पास **QPM** का भंडार होगा जो वानिकी उत्पादकता को बढ़ाने में बड़ी भूमिका निभाएगी। गैर वन क्षेत्रों में कृषि वानिकी के माध्यम से संस्थान द्वारा अनेक कृषि वानिकी माडल डॉ. आदित्य कुमार द्वारा विकसित किए गए हैं। साल प्रजाति के क्षेत्र में भी हम काफी काम कर रहे हैं। खान क्षेत्र में भी श्री संजीव कुमार, श्री एस.एन.मिश्रा का कार्य अतुलनीय है।

सेवानिवृत प्रधान मुख्य वन संरक्षक (वन बल प्रमुख) झारखण्ड सह संस्थान के **chair of excellence** के डॉ. एच.एस.गुप्ता ने अपने संबोधन में भारत के विकासरथ को अतुलनीय बताया। प्रजातान्त्रिक देश होने के नाते युवाओं पर बड़ी जिम्मेवारी हैं। वानिकी शोध में विकास के कारण देश की आर्थिक स्थिति मजबूत होगी।

इसके आलावा बाह्य केंद्र पर्यावरण अनुसंधान केंद्र, सुकना, पश्चिम बंगाल, वानिकी अनुसंधान एवं विस्तार केंद्र, जदुआ, हाजीपुर, बिहार, वन अनुसंधान केंद्र, मांडर, रांची एवं लाह बीज फार्म, चंदवा में भी ध्वजारोहण किया गया एवं प्रभारियों द्वारा संबोधन में देश की आजादी अछुन्न रखने की अपील की गई। मांडर में नए प्रभारी श्री बी.डी.पण्डित ने कर्मचारियों एवं उपस्थित ग्रामीणों को आजादी का अमृत महोत्सव, मिशन लाइफ एवं पर्यावरण की चर्चा करते हुए देश की उन्नति में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करने का आग्रह किया।

आयोजित स्वतंत्रता दिवस कार्यक्रम की झलकियाँ